

का उत्पादन या प्रशिक्षण

संपूर्ण भारत में शक्ति की आराधना के 9 रूप

भारत में अनेकता में एकता देखने को मिलती है, भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक है नवरात्री

दुर्गा पूजा या नवरात्री हिन्दुओं के द्वारा मनाया जाने वाला एक बहुत ही महत्वपूर्ण त्योहार है। नवरात्री में हिन्दू देवी माँ दुर्गा की पूजा की जाती है। नवरात्री का मतलब नौ रातें, इस दौरान दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है। यह भारत के अलावा नेपाल में भी मनाया जाता है। दुर्गा पूजा को लेकर अलग अलग लोगों की अलग अलग मान्यताएँ हैं। हिन्दू कैलेंडर के अनुसार, वर्ष में 4 नवरात्री होती हैं। 2 मुख्य नवरात्रि तथा 2 गुप्त नवरात्रि। 2 मुख्य नवरात्रि में से एक तो जो पितृ पक्ष के समाप्त होने पर आश्विन मास में प्रारंभ होती है तथा दूसरी जो की हिंदू नववर्ष चैत्र में प्रारंभ होती है। मान्यता है कि गुप्त नवरात्रि का महत्व शारदीय नवरात्रि और चैत्र नवरात्रि के बराबर ही होता है। खासकर तंत्र मंत्र की साधना करने वाले लोगों के लिए गुप्त नवरात्रि बेहद खास होती है।

शारदीय नवरात्री -

यह मुख्य नवरात्री है, जिसे मास नवरात्री भी कहते हैं। यह नवरात्री आश्विन शुक्ल पक्ष की पड़वा से शुरू होती है। पड़वा नौ दिवस तक मनाया जाती है। नवरात्री के 10 वें दिन दशरथ होता है, उसके 20 दिन बाद दिवाली का त्योहार मनाया जाता है। शरद माह में आती है, इसलिए इसे शरदीय नवरात्री भी कहते हैं।

चैत्र नवरात्री

इसे बरसात नवरात्री भी कहते हैं। चैत्र माह के शुक्ल पक्ष में आती है। इस नवरात्री के साथ हिन्दू कैलेंडर के अनुसार नया साल की शुरुवात होती है। यह नवरात्री के समय आती है। इस नवरात्री के नौवें दिन, रामनवमी का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन इसे राम नवरात्री मानते हैं। जो लोग राम नवरात्री का त्योहार मनाते हैं, वो इस नवरात्री में भी होते हैं। यह नवरात्री उत्तरी भारत में बहुत प्रसिद्ध है। महाराष्ट्र में कुबेरी पड़वा एवं आगस्टेन में जलरी के साथ त्योहार होती है।

माता दुर्गा के नौ अवतार

माता तैलपुत्री - प्रथम दिन माता तैलपुत्री की पूजा का होता है। यह देवी दुर्गा का ही एक रूप है। माता ने अपने इस रूप में तैलपुत्र हिमालय के घर जन्म लिया था। माता अपने इस रूप में तुषाम पर विराजमान हैं। उनके एक हाथ में शिखर और दूसरे हाथ में कमल का फूल है।
माता बांदावरात्री - दूसरा दिन माता बांदावरात्री की पूजा का होता है। माता ने अपने इस रूप में अमरनाम दिव को घने के लिए करतव्य किया था। देवी ने अपने इस रूप में एक हाथ में कमंडलु और दूसरे हाथ में गज की माला धारण किये हुये हैं। इस दिन माता को सवहार का भोग मनाया जाता है तथा डूबी का दान किया जाता है। माता के इस रूप का पूजन तैल अनु प्रातः काल के लिए किया जाता है।
माता चंदमटा - तीसरे दिन माता चंदमटा की पूजा की जाती है। कल अना है की यह देवी का इस रूप है, परंतु फिर भी देवी के इस रूप से मंत्रों को समी करो से नुक्ति मिलती है। नौ के इस रूप में 10 हाथ हैं तथा सभी हाथों में नौ ने राख धारण किए हुये हैं। इनके देखकर ऐसा लगता है कि नौ की वृद्ध के लिए तैयार है।
माता कुम्भाज - चौथा दिन होता है देवी कुम्भाज के पूजन का। ऐसा कल जाता है कि माता के इस रूप में हवी से ब्रह्मांड की शुरुवात हुई थी। देवी के इस रूप में 8 हाथ हैं और उन्होंने अपने इन 8 हाथों में कमंडलु, धनुष, बाण, कामल, अमृत कलश, चक्र तथा गदा लिए हुये हैं।
माता स्कंदमाता - नवतम में पांचवे दिन देवी के इस रूप की पूजा होती है। माता के इस रूप में पूजन से उनके मनो को सारे पापों से मुक्ति मिलती है तथा मनो की प्रीति होती है। नवरात्री के इस दिन माता स्कंदमाता को अस्सी नमस्कार अष्टौ अंगन करने से नैवेद्य में लेने वाली नौवारी नहीं होती और इमान रख्य रहता है। माता के इस रूप में माता कलश पर विराजमान है।
माता कार्याल - छठे दिन देवी के इस रूप की पूजा की जाती है। देवी के इस रूप को कार्याल भी कहते हैं। उनकी चोखे नखत्र से पांच किया था तथा देवी ने अपने इसी रूप में नरिसिंह का रूप लिया था। कल जाता है कि इसी कारण नवरात्र के अग्रो पक्षी के रूप में पक्ष के लिए नोचिरो ने देवी के इसी रूप का पूजन किया था।

देश के विभिन्न क्षेत्र में नवरात्री का महत्व

महाराष्ट्र में इस आदिने में बड़े बड़े पड़वों में देवी का पूजन सभी लोग साथ मिलकर करते हैं। महाराष्ट्र में दुर्गा पूजा का आरंभ होता है, जो सचनी से नवमी तक होता है। ये तीन दिन पूरा बनारस दुर्गा पूजा में पूजा पूजा होता है। नवमी के अंतिम दिन दुर्गापूजा देवी के अंतिम नवरात्रि का त्योहार होता है।
गुजरात में इसे नवरात्रि कहते हैं, जहाँ पहले सात दिन रात रखा जाता है। अष्टमी के दिन रात होती है, और कनकाओं को नैवेद्य करते हैं। महाराष्ट्र में नवरात्री के नौवें पर सन्यासी का भी आरंभ होता है।
गुजरात, मुंबई में नवरात्री का महत्त्व होता है महत्त्व सा. गज, डांडिया रास का विशेष आरंभ होता है देवी सभी रूपों में किया जाता है।
गुजरात में अब सवहार द्वारा नवरात्री फेस्टिवल सेलिब्रेशन का आरंभ होता है। जहाँ देव दिवाली से लोग प्रसन्न हैं और इस कार्यक्रम में बड़ बड़ का दिखावा होते हैं।
महाराष्ट्र में नौ परवराजान का विशेष महत्त्व है, लोग नवरात्री के पहले दिन इसकी विशेष रीति करते हैं।
तमिलनाडु में देवी के पैरों के धारण और देवी की तरह तरह की प्रथिना को घर में स्थापित करते हैं, जिसे मौजू या कोलु कहा जाता है। यह एक झाली की तरह प्रस्तुत की जाती है। सभी अपने हिरोहीरो एवं फुल्लियों को अपने घर इसे रखने के लिए आनखित करते हैं। यहाँ रंगोली भी बनाई जाती है, जिस पर कलस स्थापना की जाती है। इस दौरान स्थापन प्रसाद बनाया जाता है, जो सभी को बाँटा जाता है। तमिलनाडु के साथ साथ केरल में भी अष्टमी के दिन सरस्वती पूजा का महत्त्व है। इस दिन दिवाली देवी सरस्वती की पूजा करते हैं, साथ ही सभी पुस्तक, ब्या यंत्र की भी पूजा की जाती है। इसे दिन सभी मनीषी, जाड़ी की भी पूजा करते हैं, जिसे अय्यु पूजा करते हैं। तमिलनाडु के सभी मंदिरों में विशेष पूजा होती है।
कर्नाटक में नवमी के दिन अय्यु पूजा होती है। यहाँ मौजू में दशरथ के दिन मौजू दशरथ मनाया जाता है, जो पूरी दुनिया में अतिप्रसिद्ध है। इस त्योहार की शुरुवात वर्ष रज्जा वोटवार में 1610 में की थी। सन 2010 में मौजू दशरथ 400 साल पूरे कर लिए थे, जिसे मौजू पर हट साल से ज्यादा मध्य आरंभ किया गया था। यह दिन से किसी भी अखे कान की शुरुवात की जाती है।
तेलंगाना में नवरात्री को बुद्धज्ज के रूप में जो दिन मनाया जाता है। यहाँ पहले तीन दिन देवी की पूजा होती है, उसके अगले तीन दिन देवी परवती की पूजा करते अगले तीन दिन देवी सरस्वती की पूजा होती है।



सभी की पूजा की जाती है। देवी के इस रूप को कार्याल भी कहते हैं। उनकी चोखे नखत्र से पांच किया था तथा देवी ने अपने इसी रूप में नरिसिंह का रूप लिया था। कल जाता है कि इसी कारण नवरात्र के अग्रो पक्षी के रूप में पक्ष के लिए नोचिरो ने देवी के इसी रूप का पूजन किया था।
माता कार्याल - सातवें दिन देवी के इस रूप की पूजा होती है। परंतु कई लोग देवी कार्याल को कार्याल देवी समझ लेते हैं। यह देवी का बहुत ही महत्त्वपूर्ण रूप है। देवी अपने इस रूप में एक हाथ में शिखर और एक हाथ में खड्ग लिए हुये हैं।
माता महामात्री - आठवें दिन माता गौरी की पूजा का किया है। यह माता की बहुत ही लौक्य, सरल तथा सुंदर रूप है। माता अपने इस रूप में तुषाम पर विराजमान है। उन्होंने हाथों में शिखर और डमरु लिया हुआ है तथा अमृत 8 हाथों से वह अपने मनो को धरतान और अमरतान दे रही है।
नवरात्र यह है की माता के इस रूप में भगवान राख्य से माता का गंगाजल से अभिषेक किया था, इसलिए माता को यह गौर वर्ण प्राप्त हुआ।
माता सिद्धिदात्री - नौवें दिन देवी सिद्धिदात्री की पूजा की जाती है। इनकी के पूजन से नवरात्री की पूजा समाप्त होती है तथा मनो को समस्त सिद्धि प्राप्त होती है। माता के इस रूप में माता कलश पर विराजमान है। यह पूजा जाता है कि माता का दावा सिंह है। इस रूप में माता के 8 हाथ हैं 4 हाथों में माता ने राख, चक्र, तथा राख धारण किया हुआ है।



वर्ष में दो से अधिक बार आता है माता का पर्व

वसंत नवरात्रि - सनातन धर्म कैलेंडर के अनुसार चैत्र माह में मनाया जाता है। आधुनिक कैलेंडर के अनुसार मार्च का माह कहा जाता है। पर्व की 9वीं रात को 'राम नवमी' के रूप में मनाया जाता है।
गुप्त नवरात्रि - यह नवरात्रि जुन / गुलाब माह में मनाई जाती है। इसे आम लोग ना करते हुए तंत्र क्रिया करने वाले साधक मनाते हैं। जिसे माघवी नवरात्रि भी कहते हैं।
शरद नवरात्रि - अक्टूबर / नवंबर के माह में मनाई जाती है। सार्वभौमिक की शुरुआत होती है। वैज्ञानिक रूप से संरक्षण से बचाव के लिए इन दिनों एक समय भोजन करना लाभदायक होता है।
हिंदू कैलेंडर के अनुसार, नवरात्रि अश्विनी माह में मनाया जाता है। 10 वें दिन विजया साधक मनाते हैं। जिसे माघवी नवरात्रि भी कहते हैं।
पौष नवरात्रि - सनातन कैलेंडर के अनुसार पौष माह में इस नवरात्रि को मनाया जाता है। आधुनिक कैलेंडर के अनुसार दिसंबर / जनवरी माह में पड़ता है।
माघ नवरात्रि - हिंदू कैलेंडर के माघ माह में मनाया जाता है। आधुनिक कैलेंडर के अनुसार जनवरी / फरवरी का माह होता है।



कहा जाता है की देवी का पूजन बहुत ही सावधानी पूर्वक करना चाहिए, अगर देवी के पूजन में कोई भी गलती हुई तो देवी तुरंत नाराज हो जाती है। इसलिए जब भी किसी पंडाल में देवी विराजमान की जाती है, तो पंडितों के समूह द्वारा देवी के पूजन का पूरा ध्यान रखा जाता है। ब्रह्मणों द्वारा 9 दिनों तक सारे विधिरिधान तथा मंत्रोच्चारण बहुत ही सावधानी पूर्वक किए जाते हैं। जो लोग घरों में देवी को विराजमान करते हैं, वह भी पूजा में सारी सावधानी करते हैं।

पाठकों की बात

पत्र, प्रतिक्रियाएं, सोशल मीडिया

विषाद तो जैसे

विषाद तो जैसे जीवित लारा...! कमाल है ना ये बात कि जब नया खिलते है तो अकार की तरफ उठते हैं और जब मुखाते है तो जमीन की तरफ गिर जाते हैं। आदमी जीवित होता तो अकार की तरफ उठता और मरणा तो दमन होगा मित्रों। विषाद कुछ चित्त नीचे की तरफ गिराए और आनंद से धरा चित्त ऊपर की ओर उठकर जायेगा परमात्मा में। - राकेश मिश्रा

धागा था मोतियों

धागा था, मोतियों को धाम कर खाया मलान बन आसमनों को सजा कर खाया दुःख धागा कमजोर था था धातु के होते निखरी मोती अग्रगण्य के इश्वर उभर विखरी हुये दुःखों को समेट कर नवरात्रियों के चारद में लुप्त कर चुपचाप चली लौटती अग्रगण्य में कहीं रौशन देवीओं को नुँ ही छोड़ कर। - शीखा लालवी

ख़ास पत्नी... चलो सखी! मिलकर जयकार

चलो सखी! मिलकर जयकार लगाएँ अपने भीतर की शक्ति को जगाएँ नवरात्र की इस पावन बेला में आशाओं के नवदीप जलाएँ... असुखा के चक्रवर्त्य को तोड़ें अत्याचार की बेराधिता को तोड़ें न्याय-अन्याय के इस समर में दुर्गा रूप स्वयं में भर लाएँ... चलो जयकार प्रचंड रोष की ज्वाला पर घर में उठे अक्रोश मतवाला और कुछ नहीं तो अपने ही भीतर से डा के मणिधार को भागएँ... शिक्षा का प्रचार करे हम कुरीतियों पर बार कर दें अपने अस्मिता की जीवन्तता खातिर चलो खुद को इस पहचान बनाएँ। - सीमा धारिया

जीवन में हो उजियारा, दूर हो

जीवन में हो उजियारा, दूर हो अंधेरा मैं ने पन धारा, आया नवरात्र प्यारा जग जननी करते है नमन आपको कर जोड़ु विनती हो करपाया हवाय महामारी का नाँव मचा चारो ओर मिले सुरक्षा कवच मैं सबको शक्ति दो मैं भक्ति दो मैं नारा करे मैं सारी विकृतियों को ऐसे आनंद के साथ आओ मैं हमारे द्वार खुलियों का सने द्वार , हर सपना हो साकार। मनाने होंअड्डस से नवरात्रि का त्योहार। - चंदना भटनगर

मोह- मद वृण कर ज्ञान- निधि पूर्ण

मोह- मद चूर्ण कर ज्ञान- निधि पूर्ण कर। नईद दिव्यिनी मैं भय - उगल लो। भीत से भ्रुकुटि देख ज्ञान बोले ज्ञान- ज्ञानि। अग्रध कर धन्य चोपेक उगल लो। आसुरी विचार अब पाये न पाताल उर। विषदा से सारत को काली अस्वत लो। दिव्य भय विर न्या प्राण किये प्रीत से जो नमन 'अमर' - उर अम्बिके स्वीकार लो।। - शुभा शकुना मिश्रा अग्र

जाने कैसा ये वस्त्र गुजर रहा

जाने कैसा ये वस्त्र गुजर रहा है गुजर रहा है लम्ह-लम्ह,अरसा-अरसा वस्त्र की साँझिया ये कौन कर रहा है नुँ ही सोचने-सोचते तुम्हें उम्र बीत रही है, मान कि जरा मैं संभर सा गया था सूरज सा दूर से वो दाक रहा था मिरर गम कैसे पास जाके छू लिया। जाने कैसा ये वक गुजर रहा है। - नीलामा श्रीरामस्व

बड़ा ही चमत्कारिक दिन होगा

बड़ा ही चमत्कारिक दिन होगा। जब वह न्यून चैनल वाले विहार में विकास को खोज निकालेंगे। तन-मान-धन धन से लगे हुए इन सभी न्यून चैनल एकटो और संवाददाताओं को मेरा दंडवत प्रणाम !! आखिर कब तक छुआ होगा विकास। मिलेगा जरूर विहार में विकास मिलेगा मिलकर रहेगा। - प्रवीण माटी

पहना जिसके नाम का कंगन बिंदी

पहना जिसके नाम का कंगन बिंदी हारा माँग मैं उसके लिए प्रपु से दुआ इंगार। प्रपु से दुआ हनुमानिनी उखना काया। चले संवाद संग पता का बक्कर सावा। करे नहीं तकर, न टाले कोई कदना। पढ़ता सिर पर ताज,तभी पवी का पहना।। - डॉ विपिन पाण्डेय

हे जग-जननी हे जग-तारण करे धरा पर

हे जग-जननी हे जग-तारण करे धरा पर अवरार, बूट-बूट-बूट-बूट-धराधर के साथ चले मानव कर्त व्यभिचार, लखे सारा जगती नित,अकला नित मारी जाती शक्ति स्वराष, नवरात्र लिए नवरात्र मैं दुर्गे दुखलौरी बन जाओ सबको पतवार। - रमेश कुमार सिंह

QUIZ TIME

- 1) वाकाटक नरेशों को बस्तर के किस राजवंशी शासकों से संघर्ष हुआ ?
- 2) छत्तीसगढ़ का वास्तविक राजनीतिक इतिहास किस राजवंश की स्थापना के साथ आरंभ होता है ?
- 3) छत्तीसगढ़ के किन क्षेत्रों में नरबलि की प्रथा प्रचलित थी ?
- 4) कौन-सा जनापद नरनाथ बंसिन का भाग है?
- 5) छत्तीसगढ़ राज्य के सर्वप्रथम गठन विचार के संकल्पनाकार है?

Ramaquiz

आज का इतिहास

नई दिल्ली (वार्ता)। भारतीय एवं विश्व इतिहास में 18 अक्टूबर की प्रमुख घटनाएं इस प्रकार हैं- 1386 - जर्मनी में इडलबर्ग विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। 1564 - इंग्लैंड के नौसेनिक क्रिस्टोफर कोलंबस ने दूसरी बार अमेरिका यात्रा शुरू की। 1572 - स्पेन की सेना ने गारसिय पर हमला कर दिया। 1648 - उत्तर अमेरिकी उपनिवेशों में 'बोस्टन शूटेस' पहला शरमंजन बना। 1878 - थॉमस एडिसन ने सोलु उपयोग के लिए बिजली उपलब्ध कराया। 1892 - अमेरिका में विकास से न्यूयॉर्क के बीच पहली लंबी दूरी की वाणिज्यिक फोन लाइन को शुरू किया गया। 1898 - अमेरिका ने स्पेन से पुर्तगाल का अपने कब्जे में लिया। 1900 - काउंट बर्नार्ड जॉन बुलो जर्मनी के चांसलर बने। 1922 - ब्रिटिश ब्रॉडवॉटरिंग कंपनी की स्थापना हुई, जिसका नाम बाद में बदलकर ब्रिटिश ब्रॉडवॉटरिंग कॉर्पोरेशन किया गया। 1925 - प्रसिद्ध रॉमंच निदेशक और नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के पूर्व निदेशक खालिद अल्काजी का जन्म। 1931 - बिजली के खोजकर्ता थॉमस एडिसन का निधन। 1944 - द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नाजी जर्मनी से चेकोस्लोवाकिया की स्वतंत्रता के लिये सोवियत संघ ने लड़ाई शुरू की। 1950 - हिन्दी फिल्मों में सिद्धार्थ अभिनेता ओम प्रकाश का जन्म। 1954 - टेक्सस इंस्ट्रुमेंट्स कंपनी ने पहले ट्रांसजंक्शन रेडियो का निर्माण किया। 1967 - रॉस ए. ब्रेवे को भीतकवी का नोबेल पुरस्कार दिया गया। 1972 - पहले बहु-आयामी हेलीकॉप्टर एएस-315 का बंगलुरु में हवाई परीक्षण।

